ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE-II | JULY | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

भीष्म साहनी के कथा–साहित्य में चित्रित नारी समस्यायें

शोधछात्रा
मोरे सोनाली विजयकुमार
दयानंद कला महाविद्यालय,लातूर

प्राचीन काल से ही नारी के सामने कई तरह कीसमस्यायें आती रही हैं। उसकी इन समस्याओं को समाप्त करने के प्रयास सदियों से चले आ रहे हैं, परन्तु आज तक नारी की समस्याओं का अंत नहीं हुआ। इन समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से उजागर करने का प्रयास भी कई साहित्यकारों ने किया है। इन्हीं साहित्यकारों मे भीष्म साहनी जी भी एक उल्लेखनीय कथाकार माने जाते है। भीष्म जी ने भी नारियों की समस्याओं के प्रति समाज में जागृति लाने का प्रयास अपने साहित्य के माध्यम से किया है। भीष्म साहनी जी के साहित्य में नारी की निम्नलिखित समस्याओंका चित्रण इस प्रकार है–

१. **अशिक्षा :–**

ऐसा कहा जाता है कि आधुनिक काल में जैसे ही नारी शिक्षित होने लगी है वैसे ही उसने अपना विकास कर लिया है। लेकिन कहीं–हीं आज भी ऐसे उदाहरण दिखाई देते है, जहाँ शिक्षा न होने के कारण मे एक संकटो से घिर गई है। 'मय्यादास की माड़ी' उपन्यास समें एक स्कूली मास्टर की बेटी सुमित्रा अनपढ़ होने के कारण अपने बीमार पति का खत नहीं पढ़ पाती है और समय पर मदद न मिलने से उसकी मौत हो जाती है। 'कुंतो' उपन्यास में जयदेव की बहन विदया को अनपढ़ होने के कारण पाँच–पाँच बच्चों की माँ बनना पड़ता है, फिर भी कोई विचार नहीं कर पाती और जब उसका भाई उसे ताने देता है, तो उसे इस बात दु:ख होता है किवह स्टुल से कूदकर गर्भ गिराने का प्रयास करती है। अर्थात अशिक्षा के कारण नारी हमेशा संकट मे फँस जाती है।

२. **वेश्या समस्या :–**

भीष्म साहनी के 'बसंती' उपन्यास की बसंती चाहे दीनू के साथ भाग आयी हो और उसने भगवान की तस्वीर के सामने शादीकी हो फिर भी रखेल का दर्जा देता है। अर्थात शादी होने के बावजूद भी उसने सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए रखता है। 'मय्यादास की माड़ी' उपन्यास में दीवान मय्यादास के भाई गोकुलदास भी चंद्रा नाम की एक रखेल रख लेते है। 'अभी तो मैं जवान हुँ' कहानी में नारी की यथार्थ स्थिति का पर्दापाश हुआ है।

३. **अकेलापन :–**

अकेलापन एक ऐसी समस्या है जो हर व्यक्ति को कभी–न–कभी सताती ही है। इस अकेलेपन से निराश हुआ आदमी कुछ भी करने के लिए तैयार रहता है। भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्याय के कमिश्नर रिचर्ड की पत्नी इसी समस्या से ग्रस्त है। वह अकेलेपन की समस्या के कारण शराब पीने लगती है। 'कंठहार' कहानी मे 'मालती' अपाहिज बेटी से ग्रस्त है, इसलिए पार्टियों में दिल लगाने की कोशिश करती है।

लेकिन अंत में बेटी के गम के कारण पागल हो जाती है। इस प्रकार अकेलेपन की समस्या के भयानक परिणामों को भीष्म साहनी जी ने इन दो नारियों के सहारे प्रस्तुत किया है।

४. उपेक्षा :–

सदियों से नारी उपेक्षित रही है। भीष्म साहनी ने नारी की उपेक्षा के तीन रूप चित्रित किये है अ) पत्नी ब) बुजुर्ग नारी क) बेटी

अ) पत्नी :–

परिवार में सबसे ज्यादा उपेक्षा की नजर से देखा जाता है। जैसे :– 'कड़ियाँ' उपन्यास की प्रमिला इसी समस्या से ग्रस्त है जिसका पति महेद्र सुषमा के प्यार में उलझा हुआ है। 'कुंतो' उपन्यास में कुंतो, सुषमा, और गुलगुल जो अंत तक कोई सुख नहीं पाति। 'रास्ता' कहानी में गोविन्द माँ को उसका ब्राम्हण पति छोड़कर चला जाता है, वह वापस नहीं आता।

ब) बुजुर्ग :–

'चीफ की दावत' कहानी के शामनाथ के घर चीफ को जब दावत के लिए बुलाया जाता है, तो माँ उन्हें अड़चन लगती है। 'अनुढे साक्षात' कहानी के 'भेंट' हिस्से में समीर की माँ भी इस प्रकार अपने बेटे, बहु, पोते के द्वारा उपेक्षित है।

क) बेटी :–

'बसंती' उपन्यास की बसंती ऐसी ही उपेक्षित बेटी है। उसका बाप उसे बेचता है। 'राधा अनुराधा' कहानी में राधा का बाप धोबी है। राधा कई घरोंमे चौका बर्तन करती है। वह पैसा लाती इसलिए उम्र होने पर भी शादी नही कराता और उसे बचे देता है।

५. आर्थिक विषमता :–

अर्थ मनुष्य के जीवन को संचलित करता है। उसी के बल पर समाज चलता है। अगर मनुष्य आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो तो उसकी कोई पुछताछ नहीं होती। नारी को पहले से ही अबला माना जाता है और अगर नारी आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर हो उसे किसी भी प्रकार का अधिकार नहीं दिया जाता।

'नीली आँखे' कहानी की लड़की आर्थिक दृष्टि से मजबूर है क्योंकि वह गाँव से भाग कर आयी है उसका पति बीमार है और इस शहर में मजदूरी मिलती नही है। इसी वजह से लोगों की लालची नजरों का सामना करना पड़ता है। 'गंगो का जाया' कहानी की गंगो पेट से है। उसकी तथा उसके पति घीसू की मजदूरी चली जाने के कारण अर्थाभाव उन्हें सताता है और उसे अपने कम उम्र वाले बेटे को बूट पॉलिश करने के लिए भेज देने पड़ता है। 'घर–बेघर' कहानी की औरत दस साल से सरकारी कोठरी पर कब्जा बनाये रहती है और

चोरी भी करती है। 'निशाचर' कहानी की केसरो अर्थाभाव के कारण कड़ाके की सर्दी मे कागज बटोरने का काम करती है। उस प्रकार आर्थिक दृष्टि से विवश नारी कुछ भी करने के लिए तैयार होती है।

६. अन्याय :–

आमतौर पर नारी पर अन्याय पुरूष द्वारा ही होता है। परन्तु कहीं –कहीं सास–ननन्द के रूप में स्त्री से और कभी–कभी समाज द्वारा भी नारी पर अन्याय होता है। चाहे नारी कितनी भी प्रबल क्यों न हो, अन्याय का मुकाबला करनें में अपने आप को असमर्थ पाती है। भीष्म साहनी जी ने ऐसी नारियों का चित्रण किया है। 'मय्यादास की माड़ी' उपन्यास की रूक्मों, जो धनपतराय के षड्यंत्र के कारण पागल पति की पत्नी बनती है और ज बवह पढ़ना चाहती है तो उसका देवर तो आपत्ति उठाता ही है, समाज भी उसकी तरफ उँगली उठाता है। उसे रास्ते से गुजरने भी नहीं दिया जाता है। फिर भी वह अपने मार्ग पर दृढ़ रहती है। 'तस्वीर' कहानी में बहु को ससुर हमेशा तंग करती है। 'नई नवेली' कहानी में चमेली नयी सड़क के पड़ाव पर चाय की दुकान चलाती है। उसका पति मर चुका है, इसलिए उसके ससुराल वाले परेशान करते है।

७. अंधश्रद्धा :–

नारी मूलतः संवेदनशील होने के कारण वह श्रद्धा से युक्त होती है। हमेशा ही वह किसी–न–किसी आशंका से डरी रहती है और अधिकतर बच्चों की खुशी के लिए भगवान से प्रार्थना करती रहती है। परन्तु कभी–कभी यह श्रद्धा अंधश्रद्धा में भी परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार की अंधश्रद्धा से युक्त नारियाँ कभी–कभी समाज में अंधश्रद्धा फैलाने का काम भी करती है।

'डायन' कहानी की माँ स्वयं तो इस बात को हमेशा मानती है कि उसकी बहु डायन है। वह उससे बचने के लिए ओझा तांत्रिक के पास चली जाती है। और अंत में तो वह अपनी बहू को अलग घर में बसा देती है। माँ की वजह से पूरा घर ही उसी तरह का विचार करने लगता है। जब उपाय करने का वक्त आता है तो माँ वह नहीं कर पाती, इसी बात से उसके विचारों की व्यर्थता का आभास हमें मिल जाता है।

८. विदेशी चीजों का आकर्षण :–

आधुनिक काल में अपने को ऊँचा बताने के लिए घर में विदेशी चीजों का होना महत्वपूर्ण माना जाता है। अधिकतर स्त्रियाँ अपने आप को उच्च साबित करना चाहती है। विदेशी चीजों के आकर्षण के कारण कभी–कभी स्त्रियाँ फँस भी जाती है। 'मेड इन इटली' का लेबल उस पर लगाने के लिए कहती हैं। भारत में भी अच्छी चीजें बनती है, इस बात पर उसका भरोसा नहीं है और इस लेबल के लिए उसे अधिक पैसे देने पड़ते है। इस प्रकार विदेशी चीजों का आकर्षण उन्हें कितना मँहगा साबित होता है।

९. वर्गभेद :–

समाज में तीन वर्ग आते है १. उच्च, २. मध्य, ३. निम्न उच्चवर्ग की औरतें निम्नवर्ग की औरतों के साथ बहुत ही अशिष्टता से पेश आती है। वे अपने आगे किसी को कुछ समझती नही हैं। जैसे :– 'बसंती' उपन्यास की मिसेस सूरी बसंती को तीन दिन आसरा तो देती है परन्तु उसे हमेशा कोसती रहती है। 'शिष्टाचार' कहानी की श्रीमती जी नौकरों पर हमेशा हुक्म चलाती हैं और घर में चोरी हो जाने पर सबसे पहले नौकर पर शक करती है। 'अपने –अपने बच्चे'कहानी की नौकरानी माया के बच्चे को साथ नहीं आने देती। 'पिकनिक' कहानी के गौरी के बच्चों को वकील साहब की पत्नी अपने दरवाजे से भी हटा देती है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है की भारतीय समाज प्राचीन काल में नारी का एक उच्च स्थान था। जो धीरे–धीरे नष्ट होता गया। शिक्षा के प्रचार और प्रसार के साथ नारी की स्थिती में परिवर्तन आता गया। हर रूप में नारी दिखायी देती है। नारी जीवन का एक दर्पण भी मानो भीष्म साहनी जी ने अपने कथा साहित्य द्वारा प्रस्तुत किया है। अगर समाज की कोई भी नारी उस दर्पण में झाँक लेगी, तो उसे अपनी प्रतिछवि कहीं न कहीं दिखाई देगी।

संदर्भ संकेत

१. भाग्यरेखा – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
२. निशाचार – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
३. डायन – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
४. पहला पाठ – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
५. भटकती राख – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
६. शोभायात्रा – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
७. मय्यादास की माड़ी – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
८. तमस – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
९. भीष्म सहनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. भारत कुचेकर, विनय प्रकाशन, कानपूर–२१
१०. शोभायात्रा – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.